www.shreeradha.com
shreeradha. eschool@gmail.com
WhatsApp. +91 9423209132

भक्ति कौन कर सकता है?

स्त्री, पुरूष, नपुंसक, बाल, युवा, वृद्ध, किसी भी जाती धर्म का, देशी, विदेशी, बद्ध, मुक्त, पुण्यवान, पापी, लंगडा, लुला, धनी, निर्धन, पुजारी, शराबी, पतिव्रता, वेश्या, अनाचारी, दुराचारी, भ्रष्टाचारी, साधक, सिद्ध, सन्यासी, गृहस्थी, वानप्रस्थी, ब्रम्हचारी - कोई भी कर सकता है। केवल मनुष्य ही नही अपितु सब चराचर जीवों को भक्ति का अधिकार है।

सब अवस्थाओं में भक्ति। खाते, पीते, सोते, जागते, काम करते हमेशा करो। नहाना जरूरी है? नही, आपकी मर्जी। नहाना हो तो नहाओ या महीनो मत नहाओ या पाखाना लपेटे रहो। लाल, पीले, नीले जिस रंग के चाहो कपडे पहनो। बस सादगी से रहो। देह प्रदर्शन ना करो।

फलाहार, दुधाहार या जंगल के कंदमूल, पत्ते खाकर रहने की जरूरत? कतई नही। रोटी, दाल इत्यादी सादा शाकाहार काफी है।

सब काल में भक्ति। सुबह, दोपहर, शाम, रात सब समय भक्ति करो।

सब स्थानों में भक्ति। मंदिर, मस्जिद जाना जरूरी है? नही, घर में करो, शौचालय में करो, मयखाने में करो। जहा तुम्हारा मन चाहे वहा करो बल्कि सब जगह पर

करो क्योंकि ऐसी कोई जगह है ही नही जहा भगवान ना हो।

क्या पूरब की ओर, पश्चिम की ओर मुह कर के करो?
नही, किसी भी दिशा की ओर मुह करो।

क्या शास्त्रों का ग्यान आवश्यक है? नही, बेपढ़ा लिखा , घोर मुर्ख गवार भी भक्ति कर सकता है।

कोई व्रत, जप, तप, उपवास, पूजा, तीर्थयात्रा आदि की जरूरत?
बिल्कुल नही।

क्या योग, आसन करना पडेगा? नही, योग से तो दूर ही रहो।

बस भगवान से प्यार करना है, उनके लिए आसू बहाना है। उनका स्मरण ये विधी है तथा उनका विस्मरण ये निषेध है।
www.shreeradha.com
shreeradha. eschool@gmail.com
WhatsApp. +91 9423209132

www.shreeradha.com
shreeradha. eschool@gmail.com
WhatsApp. +91 9423209132

भक्ति किसको करनी है?

कोई भी कार्य करने से पहले मन उस कार्य के बारे में सोचता है। याने कोई भी कार्य की शुरूआत मन से होती है। मन जब निर्णय करता है तो उसे बुद्धी कहते है। मन और बुद्धी ये मन की ही दो अवस्थाएँ है।

मन इंद्रियोंको ऑर्डर देता है तो इंद्रिया वर्क करती है। इसलिए मन ही सब कार्योंका कर्ता है। गीता भी यही कहती है - बंधन एवं मोक्ष का कारण केवल मन है।

यही वजह है की भगवान केवल मन के विचारों को नोट कर के उसका फल देते है। वे इंद्रियोंका कर्म नोट ही नही करते। जैसे कोई मंदिर में भगवान के सामने हात जोड कर खडा है लेकिन उसका मन सामने वाले की पर्स चुराने की तरकीब सोच रहा है तो वह भक्ति नही मानी जायेगी बल्कि उसे चोरी का दंड मिलेगा।

इसीलिए भक्ति मन को करनी है। श्रवण कान का विषय है। सूंघना नाक का , स्पर्श करना त्वचा का तो रस लेना जिव्हा का विषय है। पूजा हात का काम है। पाठ और जप जिव्हा का काम है। तीर्थयात्रा पैरों का काम है। दर्शन आंख का काम है। जब तक इनके साथ मन से भगवान का चिंतन ना किया जाय तब तक पूजा, पाठ, जप, तीर्थयात्रा, मंदिर में दर्शन, भगवत विषय का श्रवण इत्यादि सब निर्रथक है और यदि मन से भगवान का चिंतन कर रहे हो तो इंद्रियों से भक्ति करे तो ठीक या ना

करे तो ठीक।

प्यार मन का विषय है। दुनिया मन नही देख सकती। प्यार है या नही इसका फैसला बाहरी व्यवहार से करती है और धोखा खा जाती है। लेकिन भगवान मन देखते है इसलिए उन्हे बाहरी व्यवहार से धोखा नही दिया जा सकता। जहा से विचार उत्पन्न होते है वही भगवान का निवास है। उनको किसी गवाही की जरूरत नही पडती। वे खुद नोट करते है और खुद फैसला सुनाते है। अतः भक्ति मन को ही करनी है।

www.shreeradha.com
shreeradha. eschool@gmail.com
WhatsApp. +91 9423209132